Chapter-2

अध्याय-२

आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य और गुजरात के कहानीकारों में सूर्यदीन यादव का स्थान

आधुनिक साहित्य की समस्त विद्याओं में कहानी सर्वाधिक लोकप्रिय विद्या हैं । कहानी की विकास यात्रा का आरंभ मानव जाति के इतिहास के साथ हुआ । अतः यह उनके आदिम संस्कारो और वासनाओं से सम्युक्त हैं । इसलिए मानव की प्रज्ञा के विकास के साथ जोड़कर ही उसके सहज विकास को समझा जा सकता हैं । कहने - सुनने की प्राचीन संस्कृति से लिखने - पढ़ने की आधुनिक सभ्यता तक उत्तरोत्तर विकसित होते हुए कहानी ने जो मार्ग बनाया हैं वह बहुत मनोरंजक हैं । घटना जिज्ञासा और मनोरंजन के हेतु से प्रारंभ हुई कहानी आज एक ऐसा आईना बन चुकी हैं जिसमें मानव अपना वास्तविक रुप देख सकता हैं । दूसरे शब्दो में कहे तो कहानी इंसान की परछायी हैं जो पाषाण युग से कम्प्यूटर युग तक उसके आस्तित्व के अंत - बाद तत्वों का रंगदर्शन कराती हैं । कहानी का महत्व बढ़ाते हुए जैनेन्द्रजी ने लिखा हैं कि "कहानी एक भूख हैं जो सदैव तुष्ट होने के लिए आतुर रहती हैं"।[१]

हिन्दी वाड़मय में भी कहानी वादों, अनेक आदर्शो तथा अनेक रचनात्मक व खंडनात्मक दौरों से गुजरी हैं । तथापि वह लडखड़ाई नहीं, क्योंकि उसने हंमेशा मानव समाज में व्याप्त असंगति, असमानता, पाखण्ड़, आड़म्बर तथा समस्याओं और विद्रुपताओं को नंगा कियां हैं । अत्याधुनिक युग में जहाँ साहित्य 'मानव' से कटने का अहसास करा रहा हैं । वहाँ कहानी आज भी मानव की निकट संगिनी हैं । जहाँ एक कहानी शब्द की परिभाषा का सम्बन्ध हैं कहा जा सकता हैं कि कहानी की विकासशील चेतना को किसी एक निश्चित परिभाषा में बाँधना कठिन हैं ।विद्वानकहानी साहित्य सरिता की तरह स्वतंत्र रुप से विकसित हुआ हैं । उसकी प्रत्येक लहर में मानव जीवन की अलोचना और उद्‌भावना हैं जिसे पढ़ा जा सकता हैं ।

किन्तु उसके तत्वों को विश्लेषित कर किसी एक व्याख्या की सीमा में जकड़ा नहीं जा सकता । अनेक भारतीय एवं पाश्चात्य विद्धानों ने कहानी के स्वरुप को समझते हुए उसकी परिभाषा देने का प्रयत्न किया हैं । पाश्चात्य विद्धान वेल्स कहानी को समय से जोड़ते हैं –

" किसी भी लघु कथात्मक अंश को जो सरलता से बीस मिनट में पढ़ा जा सके, कहानी कहा जा सकता हैं ।"[२]

भारतीय कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद मानते हैं – " कहानी एक रचना हैं, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता हैं ।"[३]

डॉ. गुलाबराव के मतानुसार – " छोटी कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना हैं जिसमें एक दृश्य तथा प्रभाव को अग्रसर करनेवाली व्यक्ति केन्द्री घटना या घटनाओं के आवश्यक वस्तु कुल अप्रत्याशित ढ़ंग से उत्थान पठन और मोड़ के साथ पात्रो के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कौतुहलपूर्ण वर्णन हैं ।"[४]

आधुनिक कहानी के सन्दर्भ में डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय की परिभाषा अधिक उपयुक्त लगती हैं – "ऐसा विवरण जिसमें किसी व्यक्ति के आंतरिक व्यक्तित्व और मानव व्यापार का रहस्योद्घाटन उसके जीवन की घटनाओं और क्रियाओं अर्थात उसके सामाजिक परिवेश कालेकर वो वह कहानी हैं ।"[५] इस प्रकार कहानी के साथ उसकी परिभाषा में युगानुसार परिवर्तन आया हैं । फलतः किसी भी परिभाषा को सम्पूर्ण नहीं मान सकते । संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि कहानी जीवन के किसी एक अंश अथवा मनोभाव को प्रदर्शित करनेवाली वह गद्यबद्ध रचना हैं, जिसमें कथा का तत्व होता हैं ।

आधुनिक हिन्दी कहानी की विकास यात्रा : एक विहंगावलोकन

हिन्दी साहित्य में कहानी का प्रारंभ कब से हुआ ? उसका विकास कैसे हुआ ? हिन्दी साहित्य की प्रथम कहानी और कहानीकार कौन थे ? विभिन्न कहानीकारों का क्या योगदान रहा ? इत्यादि प्रश्न हिन्दी कहानी को लेकर उठते हैं ? हिन्दी कहानियों को प्रारंभ से लेकर उसके विकास तथा उसमें सुधार को प्राक्रिया को अध्ययन की सुविधा के लिए सन १९०० ई. से लेकर आज तक के कहानी के इतिहास को समूचे कालखंड़ को कहानियों की दृष्टि से दो भागो में मुख्य रुप से बाँटा जा सकता हैं ।

(१) आजादी पूर्व की हिन्दी कहानी

(२) आजादी के पश्चात्त की हिन्दी कहानी

(१) आजादी पूर्व की हिन्दी कहानी :

आजादी से पहले की कहानियों को भी सुविधा की दृष्टि से हम तीन वर्गो में विभाजित कर सकते हैं ।

(अ) प्रेमचंद से पहले की हिन्दी कहानी (सन् १९०० ई. से १९१५ ई. तक)

"वैसे तो अनेक विद्वानों ने आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ इंशा अल्लाह खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' से माना हैं और यदि आरंभ भी माना हो तो भी हिन्दी की प्रथम अथवा आरंभिक कहानियों के विवेचन, विश्लेषण और निर्णय में उर्पयुक्त कथा को-बार-२ उद्धृत किया जाता हैं ।"[६]

उसके उपरान्त लल्लूलाल जी कृत प्रेम सागर और सदल मिश्रकृत 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना भी हिन्दी कहानी के आरम्भिक विकास के संदर्भ से जुड़ी हुई हैं ।

इस प्रकार हिन्दी में कहानी लाने का सर्व प्रथम श्रेय 'सरस्वती' पत्रिका को जाता हैं।

जिसका प्रकाशन सन् १९०० में प्रयाग में हुआ । उसी पत्रिका में सर्वप्रथम पंड़ित किशोरीलाल गोस्वामी की कहानी 'इन्दुमती' प्रकाशित हुई । इस प्रकार किशोरीलाल गौस्वामी को हिन्दी में सर्वप्रथम मौलिक कहानी रचना का श्रेय मिलता हैं ।

आचार्य रामचन्द्र शुकलने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में उन कहानियों के बारे में लिखा हैं –

'इसमें से यदि मार्मिक्ता की दृष्टि से भाव प्रधान कहानियों को चुने तो तीन हैं–

"इन्दुमती' (१९०० ई.) 'ग्यारह वर्ष का समय' (१९०३ ई.) तथा 'दुलाईवाली' (१९०६ ई.) यदि 'इन्दुमती' किसी बंगला कहानी की छाप नहीं हैं तो हिन्दी की यही पहली मौलिक कहानी ठहरती हैं । इसके उपरान्त 'ग्यारह वर्ष का समय' और 'दुलाईवाली' का नम्बर आता हैं ।"[७]

उसके अतिरिक्त एक अन्य कहानी पत्रिका 'इन्दु' भी उल्लेखनीय हैं । उसके माध्यम से तत्कालीन सुप्रसिद्ध कथाकार की कहानियाँ प्रकाश में आई प्रमुख कहानियाँ निम्नलिखित हैं । " किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' (१९०० ई.) माधव प्रसाद मिश्र 'मन की चंचलता' (१९०१ ई.) किशोरीलाल गोस्वामी 'गुलबदन' (१९०२ ई.) गिरजा दत्त बाजपेयी 'पंडित और पंडितानी' (१९०३ ई.) राम चन्द्रशुक्ल का 'ग्यारह वर्ष का समय' (१९०३ ई.) बंग महिला 'दुलारीवाली' (१९०७ ई.) वृन्दावन वर्मा 'राखीबन्द भाई' (१९०९ ई.) विद्यानिवास मिश्र की 'विद्याविहार' (१९०९ ई.) तथा जयशंकर प्रसाद की 'ग्राम' (१९११ ई.) 'रसिया बालम' (१९१२ ई.) उसके उपरान्त चन्द्रधर शर्मा गुलेरी विशम्भरनाथ जिज्जा आदि कहानीकारों ने हिन्दी के विकास में योगदान दिया ।"[८]

(ख) प्रेमचन्द के समय की हिन्दी कहानी (सन् १९१६ ई. से १९३६ ई. तक) :

प्रेमचन्द का हिन्दी कहानी में महत्त्वपूर्ण योगदान हैं । इस युग के कथाकारों में प्रेमचंद को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त हैं आप उपन्यास क्षेत्र में जितने महान हैं उससे कही अधिक उपलब्धि आपकी कहानी क्षेत्र की हैं । आपने उर्दू में बहुत पहले से कहानियाँ लिखना शुरु कर दिया था किन्तु हिन्दी में उनकी प्रथम मौलिक कहानी 'पंचपरमेश्वर' सन् १९१६ ई. में प्रकाशित हुई । प्रसाद की प्रथम हिन्दी कहानी 'ग्राम' सन् १९११ ई. में 'इन्दु' में प्रकाशित हुई । प्रेमचंद की उर्दू कहानियों के संग्रह 'सोजेवतन' को अंग्रेज सरकारने जलाकर नष्ट कर दिया था ।

हिन्दी में प्रेमचंद ने तीन सौ से भी अधिक कहानियाँ लिखी । प्रेमचंद ने अपनी कहानियों के माध्यम से हिन्दी कहानी क्षेत्र में आदर्शो - मुख, यथार्थवादी - परम्परा का सूत्रपात किया । प्रेमचंद ने घटना प्रधान, चरित्र प्रधान, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी हैं । उनकी कहानियाँ उद्देश्यपूर्ण हैं उसकी कहानियों में प्रथम बार भारतीय कृषक का जीवन यथार्थमय चित्रित हुआ हैं ।

भाषा शैली के विषय से भी अनेक प्रयोग किये । डॉ. शिवकुमार शर्मा लिखते हैं "विषय व्यापकता चरित्र की सूक्ष्मता विचार व भाव गंभीरता, प्रवाहपूर्ण, सुबोध, शैली, मुहावरामयी एवं लोक संग्रह की भावना से प्रेमचंद की कहानियाँ अद्वितीय बन पड़ी हैं। उनकी श्रेष्ठ कहानी 'पंचपरमेश्वर', 'आत्माराम', 'बड़े घर की बेटी', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'वज्रपात', 'रानी सारंग', 'अलगोंझा', 'ईदगाह', 'अग्निसमाधि', 'पुस की रात', 'सुजान-भक्त', 'कफन' आदि पर हिन्दी जगत को गर्व हैं । और इन्हें विश्व की श्रेष्ठ कहानियाँ की तुलना में नि:संकोच रखा जा सकता हैं ।"[९]

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, विश्म्भरनाथ कौशिक, पृथ्वीनाथ भट्ट आदि प्रेमचंद की परम्परा के कहानीकार हैं । गुलेरी जी ने केवल तीन कहानियाँ ही लिखी परन्तुं उसमें 'उसने कहा था' (१९१५ ई.) बहुत प्रसिद्ध हुई । इसी कहानी से उन्हें हिन्दी साहित्य में अमरत्व प्राप्त हुआ ।

प्रेमचंद के ही समय में हिन्दी की विकास यात्रा में कुछ प्रमुख अविस्मरणीय कहानीकारों का उल्लेख आवश्यक हैं । उसमें सबसे पहले जयशंकर प्रसाद –

जिनकी प्रथम कहानी 'ग्राम' (१९११ ई.) तथा दूसरी कहानी 'रसिया बालम' (१९१२ ई.) में इन्दु पत्रिका में प्रकाशित हुई । प्रसादजी हिन्दी कहानियों में भावुक्तापूर्ण शैली के स्थापक माने जाते हैं ।

उनकी कहानी भारतीय संस्कृति की परिचायक हैं । 'आकाशदीप', 'इन्द्रजाल', 'बिसाती', 'चूंडीवाला', 'नीरा' आदि उनकी प्रतिनिधि कहानियाँ हैं ।

उसके अलावा गोपालराम गहमरी, दुर्गाप्रसाद खत्री, जी. पी. श्रीवास्तव आदिने जासूसी ऐयासी, तिलस्मी आदि कहानियाँ लिखी ।

प्रेमचंद युग के कथाकारों में पाण्ड़ेय बेचन शर्मा 'उग्र' का नाम उल्लेखनीय हैं ।

(ग) प्रेमचंद के बाद की कहानियाँ : सन् १९३७ से १९४७ तक :

सन् १९३६ में प्रेमचंद की मृत्यु के पश्चात् हिन्दी कहानी क्षेत्र में विशाल परिवर्तन आया । इन परिवर्तनो को देखते हुए डॉ. सुरेश सिन्हा ने लिखा हैं –

"ज्वालामुखी फट चुका था और उसके विस्फोट को तथा कथित 'सामाजिक सुधारक' रोक सकने में असमर्थ थे । समाज में मध्यम वर्ग नवीन चेतना में संचालित हो रहा था। और उसे अपना भी महत्त्व समझ में आने लगा था । वह यह समझने लगा था कि उसकी पीडाएँ उनका दु:ख दर्द, उनकी भावनाएँ, प्रेम-विवाह संबंधी निराशा और कुंठाएँ - इन सबके अपने - अपने अर्थ हैं और समाज को उनके वैयक्तिक मनोभावों को समझना होगा । उसके अन्दर एक ज्वालामुखी सुलग रही थी 'क्रान्ति' की चिनगारी आग उगलने को तैयार थी और उसके सामाजिक रुप विधान का तख्ता पलट देने के शोले भड़क चुके थे । समय बड़ा नाजुक था और उस समयकालीन नाजुकता से कहानीकार विमुख नहीं रह सकता था । फलस्वरुप प्रेमचन्द्रोत्तर काल की स्थिति में परिवर्तन हुआ और व्यक्तिवादी भावनाओं ने कहानीकारें की मन: स्थिति को अपने स्पन्दन से गुदगुदाना और झंकृत करना प्रारंभ किया । हिन्दी में जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेयजी, इलाचन्द जोशी, भगवतीचरण वर्मा, तथा उपेन्द्रनाथ अश्क आदि कहानीकारो ने इस काल में व्यक्तिवादी जीवन दर्शन पर आधारित कहानियाँ लिखी । उनकी कहानियाँ में समष्टिगत जीवनवृत्त की तुलना में व्यक्तिगत जीवन चिन्तन को अधिक महत्त्व दिया गया हैं । उसमें व्यक्ति स्वतंत्रता की भावना का सबल स्वर उद्घोषित होता हैं ।"[१०]

हिन्दी कहानी में मनोविज्ञान का प्रवेश जैनेन्द्र ने हिन्दी कहानी में एक युग का प्रारम्भ किया । दार्शनिक और मार्मिकता उनकी कहानियों की प्रमुख विशेषताएँ हैं ।

'कः पन्था', 'नीलम देश की राजकन्या', 'प्रियव्रत', 'जाह्नवी', 'तत्सत', 'पाजेव', 'राजकन्या', 'महामाया', 'जयसन्धि', 'एकरात', 'राजीव की भाभी' आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं ।

'अज्ञेय' विशुद्ध मनावैज्ञानिक प्रवृत्ति के प्रतिनिधि कहानी लेखक हैं। विपथगा, परम्परा, कोठरी की बात, जयढ़ोल, मेजर चौधरी की वापसी, रोज क्षितिज, शत्रु, सेव और देव, जीवन शक्ति, शरणदाता, लेटर बक्स, बदला, बसन्त और कविप्रिया आदि उनके कहानी संग्रह हैं । इलाचन्द जोशी जितने उपन्यास के क्षेत्र में प्रसिद्ध हुए हैं । उतने कहानी के क्षेत्र में नहीं । फिर भी उनकी कई कहानियाँ बड़ी ही मार्मिक और हृदयस्पर्शी हैं जैसे डायरी के नीरस पृष्ठ, रोगी, खण्ड़हर की आत्माएँ, रोमांटिक छाया, होली और दिवाली, प्रेम और घृणा, पागल की सफाई आदि ।

कहानी कला की दृष्टि से यशपाल हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कहानीकारों में से एक हैं. यशपाल की कहानियाँ साम्यवाद तथा मनोविज्ञान से प्रभावित हैं । - 'धर्मयुद्ध, शर्ट, रोटी का मोल, कर्मफल, दुःख, कलाकार की आत्महत्या खच्चर और आंदमी, वर्दी, बारा आने, शिव - पार्वती, साग, आदमी का बच्चा, फूलों का कुर्ता और चिनगारी आदि कहानी संग्रह हैं ।

उपेन्द्रनाथ अश्क की दृष्टिकोण यशपाल से मिलता - जुलता हैं । उनकी कहानियाँ - 'पिंजरा, पाषाण, खिलौने, मरूस्थल चट्टान आदि उल्लेखनीय हैं ।' विष्णुं प्रभाकर की 'धरती अब भी घूम रही हैं, अभाव मेरा वतन, आदि उत्कृष्ट कहानियाँ हैं । भगवती चरण वर्मा का भी इस युग के सफल कहानीकारों में प्रमुख हैं –

'खिलते फूल, इन्स्टालमेन्ट, दो पहलू, विवशता आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।'

उसके अतिरिक्त कुछ हास्यमय कहानियाँ भी उस युग में लिखी गयी । उसके प्रमुख कहानीकार हरिशंकर परसाई, बेढ़ब बनारसी, जयनाथ नलीन, देवेन्द्र सत्यार्थी, रांगेवराघव, प्रभाकर माचवें, सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, चन्द्रप्रभा, विद्यावती शर्मा आदि हैं । अस्तु हिन्दी कहानी को अपने उद्‌भव से लेकर स्वतंत्रता पूर्वक तक के विकासकाल में सैंकड़ो उत्थान - पठन का सामना करना पडा । यह कहानी इन आरोह - अवरोह को निरंतर पार करती हुई उन्नति की और अग्रसर हो रही हैं ।

(२) आजादी के पश्चात की हिन्दी कहानी (स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी)

"स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की कहानी अपनी परम्परागत धारा से विलग पड़ने लगी। जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द जोशी आदि की कहानियों की कथानात्मक संसार जिस तरह व्यक्तिगत

अनुभवो और शाश्वत मूल्यों से गढ़ा गया और उससे स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी स्पष्ट रुप से अलग हैं ।"[११] उपरोक्त कथाकारों की कहानियों मे बहुत दूर तक एक सा-पन आ गया था । और एक ही कथ्य को दोहराये जाने की लाचारी बढ़ रही थी । आजादी के बाद देश में उत्साह व उमंग का एक नया वातावरण उत्पन्न हुआ था, नई आकांक्षाओं तथा साथ ही नयी समस्याओं का जन्म हुआ । इस बढ़ती हुई परिस्थितियों को अभिव्यक्त करने की पकड़ पुराने कहानीकारें में नहीं थी । सन् १९५० के आस - पास नये कहानीकारो का एक वर्ग सामने आया, जिसने देश, समाज तथा विचारो के बदलते परिवेशों को अपनी कहानियों में हू - ब - हू व्यक्त किया । ये कहानियाँ स्वातंत्रयोत्तर कहानी के रुप में जानी जाने लगी । उस संभवित परिवर्तन को 'नयी कहानी' नाम दिया गयां । 'नयी कहानी' स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी का प्रथम चरण हैं । विभिन्न कहानी आन्दोलन ही स्वातंत्रयोतुर हिन्दी कहानी के विकास को सूचित करते हैं । अतः यहाँ पर विविध कहानी आन्दोलन की संक्षिप्त परिचय दिया हैं ।

नयी कहानी :

सन् १९५० के आस-पास हिन्दी कहानी के क्षेत्र में जो आन्दोलन शुरु हुआ कहानीकार आलोचको ने उसे 'नयी कहानी' के नाम से विभूषित किया । हिन्दी कहानी की नयी कहानी संज्ञा से प्रयोग करनेवालों में कमलेश्वर, मोहन - राकेश, और रमेश बक्षी का नाम उल्लेखनीय हैं।

१९५६ में नामवरसिंह ने पहली बार स्पष्टतः प्रश्न के रुप में नई कहानी की बात उठाई थी कहानी के लिए जो नया पाठक वर्ग बन रहा था, उसमें कहानी की रचनात्मक संभवनाओं की खोज की जानी बहुत आवश्यक थी । उस खोज का परिणाम था कि 'चीफ की दावत' (भीष्म साहनी), 'गुल की बन्नो' (धर्मवीर भारती), 'डिप्टी कलक्टरी' (अमरकांत), 'गदल' (रांगेय राघव), 'रसप्रिया' (कर्णेश्वरनाथ रेणु), 'हंसाजाई आकेला' (मार्कण्डेय), 'आटे के सिपाही' (आनन्द प्रकाशजेन), 'पत्थर की आँख' (कमलजोशी), 'बादलो के घेरे' (कृष्णा सोबती), 'जहाँ लक्ष्मी केद हैं' (राजेन्द्र यादव), 'राजा निरबंसिया' कमलेश्वर आदि कहानियाँ हिन्दी कथा क्षितिज पर उभर आयी "नयी कहानी के समर्थन का श्रेय नामवर सिंह को जाता हैं । जिन विद्वानों ने नयी कहानी नाम का विरोध किया उसमें डॉ. शिवदान सिंह चौहान का नाम उल्लेखनीय हैं । परन्तु परिवर्तन की दृष्टि को उन्होंने भी स्वीकार किया हैं ।"[१२]

"नयी कहानी आन्दोलन को साहित्यिक प्रतिष्ठा दिलाने में कमलेश्वर की 'नयी कहानी की भूमिका' (नई कहानियाँ के सम्पादकीय लेखो का संकलन) का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा हैं ।"[१३]

यद्यपि कमलेश्वर नयी कहानी के आन्दोलन को मानते हैं उनके अनुसार – "नयी कहानी मेरे लिए आन्दोलन नहीं, नये के लिए निरंतर प्रयत्नशील और प्रयोगशील रहने की प्रक्रिया हैं ।"[१४]

डो. नामवर सिंह ने निर्मल वर्मा की 'परिन्दे' कहानी को 'नयी कहानी' की पहली कहानी माना । उनके ही शब्दो में "सिर्फ सात कहानियों का संग्रह 'परिन्दे' निर्मल वर्मा की पहली कृति नहीं हैं बल्कि जिसे हम 'नयी कहानी' कहना चाहते हैं उसकी भी पहली कृति हैं ।"[१५]

नयी कहानी के 'काल निर्धारण' को लेकर आलोचकों में पर्याप्त मतभेद हैं । किन्तु स्वातंत्रोयत्तर हिन्दी कहानी में आये परिवर्तन को प्रायः सभी विद्वानों और आलोचको ने स्वीकार किया हैं । देखते ही देखते 'नयी कहानी' बहुत जल्द ही हिन्दी साहित्य की केन्द्रिय विद्या बन गयी । और उस तरह से 'नयी कहानी' आन्दोलन अपनी पूरी प्रतिष्ठा के साथ हिन्दी कथा साहित्य पर हावी हो गयी । 'नयी कहानी' की विकास यात्रा में जिन साहित्यकारों का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा उनमें – मोहन – राकेश, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, धर्मवीर भारती, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, श्रीकान्त वर्मा आदि प्रमुख हैं। इन कथाकारों की कहानियों से नई कहानी की विकास प्रक्रिया को काफी वेग मिला और देखते ही देखते 'नयी कहानी' आन्दोलन हिन्दी कथा साहित्य की दुनिया पर छा गया।

नयी कहानी के कथाकारों का दृष्टिकोण बदला हुआ हैं । ये कथाकार नवीनता के साथ – साथ परिवर्तन – शीलता के भी आग्रही हैं । इन्होंने अपने आस – पास के परिवेश को जिया, अनुभव किया उसी की प्रमाणिकता अभिव्यक्ति अपनी रचनाओं में की। नयी कहानी व्यक्ति सत्य को उद्‌घाटित करती हुई समाज के सत्य को प्रतिपादित करती हैं । "नई कहानी आन्दोलन में जिन विषयो पर कहानियाँ लिखी गयी उसमें – आस्था, अनास्था, नयी जीवन मूल्य, विघटन, विद्रोह, व्यक्ति समुदाय, सेक्स प्रेम, विवाह दाम्पत्य, परिवार संस्था, नगरबोध अर्थात नये कथ्य और कथन का समावेश होता हैं ।"[१६] "नयी कहानी पाश्चात्य चिंतन से प्रभावित हैं । खासतौर पर मार्क्सवाद और अस्तित्ववाद से । नयी कहानी की वास्तविक उपलब्धि वे हैं जहाँ दोनों विचार धाराओं का संतुलित रुप मौजूद हैं ।"[१७]

नयी कहानी ने शिल्प के स्तर पर अनेक प्रयोग किये हैं ।

कुछ अन्य कथाकारों में अमरकान्त, राजकमल चौधरी, शेखर जोशी, अमृतराय, रघुवीर सहाय, ज्ञानरंजन, ममता कालिया, विनयमोहन आदि नाम उल्लेखनीय हैं ।

अकहानी :

सन् १९६० के बाद हिन्दी कथा साहित्य में अकहानी आन्दोलन का प्रारंभ हुआ। अकहानी पश्चिम मे जन्मी 'एन्टी स्टोरी' का भारतीय संस्करण हैं । नयी कहानी ने प्रेमचन्द के मार्ग को अपनाया था, अकहानी में प्रेमचन्द के मार्ग को छोड़ दिया और जीवन मूल्यों के विरुद्ध खड़ी हो गयी । जगदीश चतुर्वेदी, गंगा प्रसाद, विमल आदि कथाकार आलोचको ने नयी कहानी के बारे में अपने - अपने वक्तव्य देकर उसे प्रतिष्ठित करने की कोशिश की। अकहानी के प्रवक्ताओं ने उसे परिभाषित करने का प्रयास होता रहा हैं। कुछ आलोचकों के अनुसार "उसका जन्म मूलतः रचनात्मक विकृति की पहचान के फल स्वरुप हुआ। राजेनद्र यादव, राकेश और कमलेश्वर नयी कहानी के केन्द्र में आकर गंदगी फेला रहे थे इसलिए युवा - पीढ़ी ने उस विकृतियों से मुक्त होकर लिखना चाहा ।"[१८] "रतनलाल शर्मा के अनुसार अकहानी आन्दोलन साढ़ोत्तरी युग का दूसरा आन्दोलन हैं । जिस में व्यक्ति अकेला हैं न, वह किसी के साथ हैं और न कोई उसके साथ हैं उसके लिए अतीत और भविष्य का कोई अस्तित्व नहीं हैं वर्तमान भी नाम मात्र के लिए हैं । वह केवल जड़ या मूल के रुप में निःशेष होकर रह गया हैं और पूर्णतः आत्मा केन्द्रित हैं ।"[१९]

अकहानी में निर्मम संबंधो की निर्मम अभिव्यक्ति हुई हैं उसमें सम्बन्ध दीनता की स्थितियों को विस्तार से अभिव्यक्ति मिली हैं । संबंधो की गड बड मूल्यो को भी अस्त-व्यस्त कर देती हैं । अकहानी आन्दोलन में बूढ़े - पीढ़ी को लेकर अनेक कहानियाँ लिखी गयी । उसमें काशीनाथ की 'सुख' रवीन्द्रकालिया की 'नौ साल छोटी पत्नी' ज्ञानरंजन के 'पिता' रमेशबक्षी की 'पिता दर पिता' दूधनाथ सिंह की 'सुखान्त' आदि ।

"अकहानियों में अधिकांश स्त्री - पुरुष के प्रेमसंबंधो को ही लेकर लिखी गयी हैं । सेक्स संबंधी हर नैतिकता और गर्जना का तिरस्कार किया ।

अकहानी शिल्प की दृष्टि से अकहानी आन्दोलन एक विक्रांन्तिपूर्ण विद्या हैं ।"[२०]

अकहानी के कहानीकारों में योगेशगुप्त, ममता कालिया, श्याम मोहन, श्रीवास्तव, सुरेन्द्र अरोड़ा, श्रीकान्त वर्मा, कुलभूषण, राजकमल चौधरी, हिमांशु जोशी, ज्ञानप्रकाश, जगदीश चतुर्वेदी आदि का नाम महत्त्वपूर्ण हैं ।

सचेतन कहानी :

"सन् १९६४ में डो. महीपसिंह के सम्पादकत्व के 'आधार' नामक सचेतन कहानी विशेषांक प्रकाशित हुआ । 'आधार' के इस विशेषांक में महीपसिंह, राजीव सक्सेना, उपेन्द्रनाथ

अश्क और श्याम परमार आदि ने सचेतन कहानी संबंधी दृष्टिकोण को स्पष्ट किया । उस अंक में आनंद प्रकाश जैन, कमल जोशी, कुलभूषण, धर्मेन्द्र गुप्त, मधुकर सिंह, मनहर चौहान, महीप सिंह, योगेश गुप्त, वेदराही, सुखवीर, हिमांशु जोशी आदि बीस कथाकारों की कहानियाँ छपी । बाद में महीपसिंह ने सचेतन नाम से एक त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादन किया जो सचेतन कहानी आन्दोलन का प्रमुख मंच बनी ।"[२१]

सचेतन कहानी का आन्दोलन आधुनिक दृष्टि का आन्दोलन हैं । यह कहानी के मेनरिज्म और रुढ़ि दोनो को तोड़ती हैं । "यह कहानी आन्दोलन घटी हुई काया और हतप्रथ मानसिकता की कहानियों के विरोध में लिखी गई हैं । परिवेश के प्रति संलग्नता उसमें भरपूर बतायी गयी हैं । सचेतन कहानीकार स्वयं को समाज परक दृष्टि का लेखक मानते हैं । और सामाजिक परिवेश में सहज और संबद्ध होकर जीते हैं ।"[२२]

इस तरह सचेतन कहानी व्यक्ति और समाज को जोड़ने का काम करती हैं।

सचेतन कहानीकारों ने काम - संबंधो को लेकर अधिकांश कहानियाँ लिखी, किन्तु उनका दृष्टिकोण अकहानियों के जैसा नहीं हैं । रामकुमार भ्रमर की "लोह पर रखी हुई हथेली' महावीर सिंह 'और भी कुछ' आदि कहानियों में संभोग चित्रण न होकर संबधो की तह तक पहुंचने की कोशिश की गयी हैं ।"[२३]

उसके अतिरिक्त सचेतन कहानी में मित्र, पिता-पुत्र, माँ, बेटा आदि के संबंधो में आनेवाले बदलाव को बहुत निसंगतता के साथ व्यक्त करती हैं ।

साठोत्तरी हिन्दी कहानी आन्दोलन में 'सचेतन कहानी' ने परिचय की भौंड़ी नकल करने के बजाय भारतीय परिवेश मे घट रही घटनाओं को ही प्रश्रय दिया और हिन्दी कहानी को रोमांटिक भावुक्ता से मुक्त करने की भूमिका तैयार की ।

सहज कहानी:

"सन् १९६८ में अमृतराय ने सहज कहानी आन्दोलन का सूत्रपात किया । सन् १९६८ में अमृतराय ने 'नई कहानी' पत्रिका का स्वामित्व खरीद लिया और अपने सम्पादन में इसे इलाहाबाद से प्रकाशित करने लगे । उस तरह से सहज कहानी अस्तित्व में आई। किन्तु यह आन्दोलन उस पत्रिका के सम्पादकियों तथा अमृत तक सीमित होकर रह गया।"[२४]

सहज कहानी की रुपरेखा स्पष्ट करते हुए महीपसिंह कहते हैं – "सहज वह हैं जिसमें आड़म्बर नहीं हैं, बनावट नहीं हैं, ओढ़ी हुई पद्धति मेनरिज्म या मुद्राकोष नहीं हैं,

आईने के सामने खड़े होकर आत्मरति के भाव से अपने अंग - प्रत्यंग को अलग - अलग कोणों से निहारते रहने का प्रबल मोह नहीं हैं ।"[२५]

सहज कहानी आन्दोलन के अर्न्तगत महीपसिंह ने सहज कथ्य और सहज अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया हैं ।

" सहज कहानी व्यापक आन्दोलन नहीं बन पायी । किन्तु नयी कहानी की कलात्मक रुप संरचना एवं अकहानीवादियों का यौन अतिरंजना के खिलाफ एक विद्रोह आवाज के रुप में अपना महत्त्व रखती हैं । अमृत राय की पत्रिका 'नयी कहानी' का प्रकाशन बन्द होने के साथ ही यह कहानी आन्दोलन भी समाप्त हो गया ।"[२६]

समान्तर कहानी :

सन् १९७२ में कमलेश्वर के 'सारिका' के सम्पादकीय लेख में 'मेरापत्र' लेख द्वारा समान्तर कहानी आन्दोलन का सूत्रपात किया ।

"कमलेश्वर, ईब्राहिम शरीफ और ललित मोहन अवस्थी ने स्वतंत्र लेख लिखकर इसकी वैचारिकता को स्पष्ट किया । युवा कहानीकारों के एक वर्ग ने इसका साथ देकर उसे पन-पने और बढ़ने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया । उन कहानीकारो में से श-यात्री, राम अरोड़ा, जितेन्द्र भटिया, सुधा अरोड़ा, मधुकर सिंह, इब्राहिम शरीफ, दिनेशवालीवाल, हिमांशु जोशी, मिथलेश्वर, भीष्म साहनी जैसे वरिष्ठ कहानीकारों का समर्थन प्राप्त हुआ ।"[२७] कमलेश्वर के नेतृत्व में समान्तर कहानी पर गोष्ठियाँ आयोजित की गयी और 'सारिका पत्रिका' के माध्यम 'समान्तर कहानी' विशेषांक निकले । कथा साहित्य में एक ठहराव की स्थिति होने से यह कहानी आन्दोलन ने हिन्दी कहानी के क्षेत्र में अपनी पहचान बनायी और चर्चा का केन्द्र रही ।

समान्तर कहानी सीधे - साधे आम आदमी से अपने को जोड़ती हैं । उस आन्दोलन में आम-आदमी के संघर्ष को अभिव्यक्ति मिली हैं । बकौल चन्द्र प्रकाश अमिताभ समान्तर कहानी में 'आम - आदमी' का जीवन संघर्ष और अप्रासंगिक पुराने मूल्यों से उसकी मुक्ति व्यवहार के सन्दर्भ चित्रित हुए । "समान्तर कहानीकार पूँजी विघटन को प्रस्तुत करने के साथ - साथ ईमानदारी, सच्चाई, सद्भाव, साम्प्रदायिक एक्य आदि के लिए जूझ रहे चरित्रो को समान्तर कहानी पूरा समर्थन देती हैं ।"[२८]

समान्तर कहानीकारो में जिनकी गणना की जाती हैं उनमें अरविंद, आशीष सिंह, ईब्राहिम शरीफ, कमलेश्वर, कामतानाथ, जितेन्द्र भाटिया, निरुपमा सेवती, मधुकर सिंह, मृदुला गर्ग, रमेश उपाध्याय, विभुकुमार, दामोदर सदन, आदि प्रमुख हैं ।

जनवादी कहानी :

"जनवादी कहानी का उदय सातवे दशक के आखिरी वर्ष में माना गया हैं । लेकिन उसका वास्तविक आधार आठवे दशक में हुआ २० जनवादी विचार 'मंच की स्थापना ने जनवादी कहानी की पृष्ठिभूमि तैयार की और सन् १९८२ 'जनवादी लेखक संघ' की स्थापना की साथ जनवादी कहानी का वास्तविक आरम्भ माना जा सकता हैं" ।[२९] जनवादी कहानी मार्क्सवादी विचारधारा से सम्बंध हैं । अतः उसमें श्रमजीवी वर्ग को ही अपनी कहानियों के केन्द्र में रखा । उसके अतिरिक्त व्यक्तिगत स्तर पर सत्य, ईमानदारी, परहित आदि मूल्यों के लिए संघर्षरत चरित्र भी जनवादी कहानी में उपलब्ध हैं । जनवादी कहानी में अधिकतर राजनीतिक कहानियाँ लिखी गयी ।

"जनवादी कहानी के विचार पर अधिक बल दिया लेकिन कथ्य के स्तर पर नहीं। अतः जनवादी कहानी शिल्प के स्तर पर कमजोर साबित हुई । उन सीमाओं के बावजूद जनवादी कहानींने हिन्दी कथा साहित्य के विकासयात्रा में अपने को जोडकर ऐतिहासिक कार्य किया ।"[३०] जनवादी कहानीकारों में काशीनाथ सिंह, मनमोहन ज्ञानरंजन, नीरजसिंह, स्वयं प्रकाश, हेतु भारद्वाज, आनंद भारती, रमेश उपाध्याय, अशगर वजाहत, उदय प्रकाश, रमेश जोशी, सुरेन्द्र मेंनन, धीरेन्द्र आस्थाना आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

सक्रिय कहानी :

सक्रिय कहानी एक प्रकार से समान्तर कहानी आन्दोलन का ही एक रुप हैं । 'सक्रिय कहानी' आन्दोलन का सूत्रपात राकेश वत्स ने 'मंच' के विशेषांक के माध्यम से किया । उस आन्दोलन का प्रारम्भ सन् १९७९ में हुआ । बकौल राकेश वत्स सक्रिय कहानी का सीधा और स्पष्ट मतलब हैं – "आदमी का चेतनात्मक ऊर्जा और जीववंता की कहानी। उस समझ और एहसास की कहानी जो आदमी की बेवसी, वैचारिक, निहत्थेपन और नपुंसकता से नजात दिलाकर पहले स्वयं अपने अंदर की कमजोरियाँ के खिलाफ सिर लेती हैं । जो साहित्य के उस सार्थकता के प्रति समर्पित हैं कि साहित्य संकल्प और प्रयत्न के बीच की दरार को पाटने का पाटिया है ।"[३१]

"सक्रिय कहानी घोर व्यक्तिवादिता का विरोध कर मूल्यगत स्थापना पर अधिक बल देती हैं । वह व्यक्तिगत स्वार्थो और लाभो को समाजगत लाभो में परिवर्तित करती हैं ।"[३२]

सक्रिय कहानी सामान्यजन्य के हितो की रक्षा करती हैं । और शोषण कर्ताओ का विरोध करती हैं । जनवादी कहानी की तरह सक्रिय कहानी भी सामान्यजन को केन्द्र मे रखकर चलती हैं ।

सक्रिय कहानीकारों में राकेश वत्स, रमेश बतरा, चित्रामृदुगल, विवेक मुझावन, सचिदानन्द धूमकेतु, सुरेन्द्रकुमार, कुमार संभव, धीरेन्द्र आस्थाना आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । हिन्दी कहानी के उर्पयुक्त विकासात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि हिन्दी कहानी ने अपने विकास की एक महत्वपूर्ण यात्रा तय की हैं । उसने अनेक उपलब्धियाँ अर्जित की हैं । जहाँ तक नई कहानी का प्रश्न हैं । उस संबंध में डॉ. देवेश ठाकुर का ही मत देखिए –

"स्वतंत्रता के पूर्व की कहानियों की तुलना मे बाद की कहानियों के अर्न्तगत निश्चित ही यथार्थपरकता का भाव अपने सही रुप में उभरा हैं और प्रेमचन्द द्वारा अपने उत्तरकाल में प्रणीत हुई दृष्टि भूल और मुख्य दृष्टि के रुप में विकसित हुई हैं ।"[३३]

नयी कहानी के उस दौर की एक विशेषता यह भी थी कि प्रेमचंद के पश्चात हिन्दी कथा – साहित्य में ग्राम जीवन के चित्रण के प्रति जो कमी आ गई थी । वह केवल दूर हो नही हुई, बल्कि तत्कालीन कथा पीढ़ी – का एक समर्थ वर्ग ग्रामीण परिवेश की जीवंत कहानियाँ लेकर उभरा और वह यह प्रश्न एकाएक मंड़रा उठा कि अचानक हिन्दी साहित्य में 'गाँव' उतनी शक्ति के साथ कहाँ से आ गया हैं ।

डॉ. शिवप्रसाद सिंह ने उस स्थिति को विश्लेषित करते हुए लिखा था कि, "वस्तुतः हिन्दी साहित्य में पहली बार लेखको की एक ऐसी जमात आयी जो शहर के मध्यवर्गीय जीवन से नही, गाँव के कृषक परिवारों से संबद्ध थी ।"[३४]

इसके बाद बड़ी तेजी से हिन्दी कहानी का नगरीकरण होने लगा और कुछ वर्ष पूर्व ही कथा साहित्य मे उभरा हुआ गाँव उपेक्षित होने लगा ।

डॉ. विवेकीराय के शब्दो मे कहें तो – "यह आश्चर्य की बात नहीं हैं कि जिस तरह राजनीति और आर्थिक क्षेत्र में ग्रामजीवन की उपेक्षा करके हम देश – देश अन्न की भिक्षा मांगते रहे । उसी तरह नयी कहानी जो ग्राम – जीवन की नयी संभावनाओं के साथ आयी, वह दबा दी गई और उसके स्थान पर नगर बोधवाली भिक्षान्नजीवी कहानियाँ चर्चित होने लगी । इस प्रकार एक नया इतिहास जन्मते ही छटपटाने लगा ।"[३५]

गुजरात में कहानी विद्या का पर्दापण गुजराती कहानी के रूप में सन् १९०० ई. में हुआ । ऐसा विद्वानों का मानना हैं । श्री अम्बालाल साकरलाल देसाई की कहानी 'शांतिदास' गुजराती की पहली कहानी मानी जाती हैं । इसी परम्परा को मलयाविल धनसुखलाल मेहता, कन्हैयालाल मुंशी, धूमकेतु (गौरीशंकर जोशी) उमाशंकर जोशी, गुलाबदास ब्रोकर, पन्नालाल पटेल, जयन्ती दलाल, शिवकुमार जोशी, धीरुबहेन पटेल, सुरेश जोशी, चंद्रकान्त बक्षी, आदि कहानीकारों ने अपनी कहानियों में अधिकतर दाम्पत्य - जीवन, संबंधो के बदलते स्वरुप, आधुनिक नारी के अस्मिता और रुढियों में जकड़ी उसकी स्वतंत्र जीवन जीने की लालसा, आर्थिक अभाव, भौतिक सुख और परिणाम, सांम्प्रदायिकता शहरी जीवन की दैनिक सच्चाई में छुपे अंतर्विरोध, जातिवाद, शोषण, भ्रष्टाचार, शासन व्यवस्था की विकृति, वृद्धो की नियति, नैतिकता, अनैतिक्ता जैसे विषयों को कथानक में शामिल किया हैं ।

गुजरात के कहानीकारों में सूर्यदीन यादव का स्थान :

गुजरात के कहानीकारों में यादव जी विशेष स्थान के अधिकारिणी हैं । हिन्दी कहानी के क्षेत्र में यादव जी का उदय सन् १९६९ में हुआ । आपकी प्रथम कहानी 'अपने आदमी' 'काव्यकुन्ज संवाद' 'अहमदाबाद' में छपी । तब से आज तक आपकी सर्जन यात्रा अवतरित चल रही हैं । हिन्दी की अनेक विद्याओं में लेखनी चलाकर कर यादव जी ने विपुल मात्रा में साहित्य सर्जन किया हैं । बहु - आयामी सर्जक यादव जी ने गुजरात के कहानी साहित्य को समृद्ध किया हैं । उनके अब तक चार कहानी संग्रह, आठ उपन्यास, दो संस्मरण, आठ कविता संग्रह तथा एकांकी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं ।

जिनमें यादव जी का कहानी कला का चरमोत्कर्ष देखा जा सकता हैं । यादव जी गुजरात के आधुनिक कहानी के आन्दोलन से जुडे रहे और हिन्दी कहानी को नया मोड़ देने वाले कहानीकारों में उनका स्थान उल्लेखनीय हैं ।

गुजरात के समकालीन कहानीकारों में डॉ. सुधा श्रीवास्तव, डॉ. प्रणव भारती, सुदर्शन मजीठिया, डॉ. दिनेश चन्द्र, डॉ. कमलेश सिंह, इन्दिरा दीवान, सूर्यदीन यादव, प्रभास शर्मा, शैलेष पण्ड़ित, सुरेश प्रसाद सिन्हा, अशोक के. शाह, भगवतशरण अग्रवाल, विष्णु विराट चतुर्वेदी, श्रीमती कमलेश सिंहा, भारती पाण्ड़े आदि । उपन्यासकार (कहानीकार) के रुप में प्रसिद्ध हैं । आधुनिक समकालीन हिन्दी वाक्य का प्रयोग साहित्य में प्रयुक्त दो अर्थों में हुआ हैं । एक तो उस अर्थ में जो समय की दृष्टि से सर्वमान्य हैं । दूसरा उस अर्थ में जो आधुनिक कथ्यगत, शिल्पगत विशेषता के आधार पर । इन आधुनिक कहानीकारों की अधिकांश कहानियाँ मनोवैज्ञानिक, कुण्ठा, सामाजिक, आंचलिक, नारी - चिन्तन,

मध्यकालीन जड़ संस्कारों से घिरे परिवार की कथा एवं दलितों पर किये गये अत्याचार को केन्द्र में रखकर उनकी कहानियों में लिखी गई हैं । लेखिकाओं ने अपनी नारी पात्रों के प्रति सहानुभूति पूर्ण दृष्टि रखी हैं । इन कहानी लेखिकाओं की सबसे बडी मर्यादा यह हैं कि उनके लेखन का दायरा बड़ा ही संकुचित है और निरुपण बड़ा ही सतही हैं।

यादव जी की कहानियों में स्त्री का दाम्पत्य जीवन, स्त्री - पुरुष सम्बन्ध, परिवार टूटन की अकुलाहट और छटपटाहट सब कहीं न कहीं मौजूद हैं लेकिन उन कहानीकारों की दूसरी मर्यादा हैं पात्र निरुपण । उनके नारी पात्र, सामान्य पात्र, सामाजिक पात्र, राजनैतिक पात्र, आदर्शात्मक और भारतीय समाज के आँके में ढ़ँके हुए हैं । नारी और सामान्यवर्ग के शोषण की परिस्थिति का अंकन उनकी कहानियों में हुआ हैं । किन्तु एक निश्चित घेरे या आंके में ।

कुछ कहानी समीक्षको ने इन्हीं बातों के कारण उनकी कहानियों को आंचलिक होने का आरोप लगाया हैं यह सत्य भी हैं । किन्तु यादव जी की कहानी प्रभाव की दृष्टि से आंचलिक हैं । संस्कार या विषय की दृष्टि से नहीं ।

इस संक्षिप्त टिप्पणी से यह तथ्य उद्‌घाटित होता हैं कि समकालीन गुजरात के आधुनिक कहानीकारों में नारी - जीवन की उलझनों समस्याओं, और स्थितियों का सतही निरुपण किया हैं । दूसरा इनकी कहानियों का क्षेत्र, अमर्यादित हैं । इन कहानियों के नारी और सामान्य, मध्यमवर्गीय पात्र, तथा कथित आकाशगामी भारतीय आदर्शों के अनुगामी हैं । कल्पना भावुक्ता ने इन कहानियों को आक्रांत किया हैं ।

स्वतंत्रता के बाद सामाजिक क्षेत्र में, क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए समाज के क्षितिज पर स्त्री, सामान्य, गाँव, जाति, धर्म का नया व्यक्तित्व उभरा । स्त्री और निम्नवर्ग आर्थिक रुप से स्वनिर्भर हुए तब उसका अहं जागृत हुआ । स्त्री - पुरुष् के सम्बन्धों में अमूल परिवर्तन हुआ । समाज के प्राचीन मूल्यों के स्तम्भ गिरने लगे व रुढ़ियाँ ध्वस्त हुई । परिवार किन्तु विश्रंखलित हुए तथा प्रेम की परिभाषा बदल गई । नारी की भूमिका घर की चार दीवारी तक मर्यादित न रहकर दफतर तक फैल गयी ।

यादव जी ने सामान्यजन के जीवन की गोपनीय परतों को खोलकर पाठकों के सामने रखा हैं । वे ऐसे पात्रों को पाठकों के सामने लाये हैं । जो जीवन से स्वाभाविक अधिकार से भी वंचित हैं । जिन्हें जीवन का यह अधिकार प्रदान करने पर धनिक वर्ग के हितों पर धक्का लग सकता हैं । इसका उदाहरण 'अपने - आदमी' कहानी में बताया गया हैं।

यादव जी को हिन्दी साहित्य में उच्च स्थान दिलाने वाली विशेषता हैं - उनके लेखन का विस्तृत दायरा व सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध । उनकी कहानियों में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, जातीय, राजनीतिक, नैतिक व पारिवारिक सभी क्षेत्रों का चित्रण हुआ हैं । उनकी "अपने-आदमी", 'जन्म', 'भैयाजी', 'मंदिर - मस्जिद', 'सिंह के बेटे उर्फ ईन्टरव्यू एक नाटक', 'फाटक खुलने के इन्तजार में', 'लौट आती कहानी', आदि नगरी मानवीय मंत्रणा का बोध कराती हैं ।

कहना न होगा कि बहु - आयामी सर्जन प्रतिभा के धनी यादव जी हिन्दी साहित्य जगत के सशक्त हस्ताक्षर हैं । जहाँ तक आपके कहानी साहित्य का सम्बन्ध हैं । हम श्रीमती कांति अय्यर के शब्दों को उद्धृत करने का लोभ सँवरण नहीं कर सकते । वे लिखती हैं कि - "वृहद परिवेश, विशाल जनसमूह गाँव, जमीन, बाग, सिवान, फसलें ऋतुएँ, मौसम उत्सव पर्व सब कुछ किसी न किसी रुप में व्यंग्यात्मक, प्रतिकात्मक, एवं बिम्बात्मक रुप से कहानी संग्रह में स्वयमेव प्रवाहित होते हैं ।"[३६]

कहानीकार यादव जी की प्रशंसा में ही डो. माया प्रकाश पाण्डे जी की टिप्पणी सचमुच, उनके हिन्दी कहानी जगत में शीर्षस्थ स्थान चिन्हनत करती हैं -

"इसमें कोई संदेह नहीं हैं कि यादव जी की कहानियाँ जहाँ एक और यथार्थ के धरातल पर टिकी हुई हैं । वहीं दूसरी और अपनी आँचलिकता के भी बनाए रखती हैं।"[३७]

यादव जी की रचनाओं के बारे में श्रीमती कांति अय्यर लिखती हैं कि —

"यादव जी एक ऐसे विरल साहित्यकार हैं । जिनकी सभी रचनाएँ आँचलिकता को प्राधान्य प्रदान कर हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान बनाया हैं । आज के युग में शहरीकरण होने एवं घर - घर टी.वी. के आगमन से ग्राम्य बोलियाँ त्वरित गति से खड़ी हिन्दी की और ढ़लती जा रही हैं । ऐसे संदिग्ध काल में यादव जी ने आँचलिक भाषा, शैली परिप्रेक्ष्य को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दृष्टान्त रुप साहित्य सृजन किया हैं ।"[३८]

डो. इन्दिरा दीवान गुजरात के प्रसिद्ध उपन्यासकारों में अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं । उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं - श्राउड़, मापदंड़, तनुतारक, उर्मिता, माही, आर्या वर्त, अधुरे होठ, माँ मरीयम, नीरु, अनंतकोटि, अनन्त नही, लिपवानिका की एक शाम, प्रश्नो का रेगिस्तान मौन - पीडा, भीष्म पितामह, ओसकी बूंद, भावना अनंतश्री अग्नि - अनावृत्त अचनहिता के तत्वो में प्रोमेदर तारा, भटस्थगंदा आदि । आत्म कथात्मक शैली में लिखी गयी 'श्राउड' पिता - पुत्र के संबंधो को एक नये धरातल पर प्रस्तुत करता हैं । तो 'प्रश्नो का रेगिस्तान' उपन्यास स्त्री पुरुष के संबंधो को नवीन ढ़ंग से व्याख्यायित करता

हैं स्त्री - पुरुष के भटकाव को भी व्यक्त करता हैं । 'मौन - पीड़ा' में महाभारत के प्रख्यात स्त्री पात्र द्रौपदी द्वारा सदियों से पीड़ा सहती 'टूटती, कुंठित होती, संघर्ष करती नारी की मौन पीड़ा को स्वर दिया गया हैं । नारी की गहरी अन्तरंग पीड़ा को बड़ी सहजता के साथ उजागर करता हैं । देश भक्ति से सम्बन्धित उपन्यास 'अनि अनावृत्त' में अनि अनावृत्त, शिवा, ब्राउन, जददनबाई, रसूल बाई, सत्मेव मुखर्जी ऐसे अज्ञान देश प्रेमी हैं जिनके साथ लेखिका ने हमारा परिचय कराया हैं । तो सुधा श्रीवास्तव का उपन्यास 'वियावान मे उगते किंसुक' की नायिका नेहा आदर्श एवं यथार्थ के द्वन्द से पनपे इस दोहरे पन के हिंड़ोले में झूलते हुए अपने आपको काफी अस्वस्थ सा महसूस करती हैं। 'चाँद छूता मन' उपन्यास में एक ओर भीतर ही भीतर सूलगती, विवश, सहनशीलता, भारतीय नारी हिमानी हैं । तो दूसरी और स्वछन्द विचरण करने वाली तृषा भी हैं, आज एक पुरुष के साथ घूमती हैं तो कल दूसरे के साथ । उपन्यास में नारी शोषण करने वाले पुरुषो के प्रति आक्रोश हैं । तो दूसरी और डॉ. प्रणव भारती का उपन्यास 'टच मी नोट' बाल मनोविज्ञान पर आधारित यथार्थ वादी उपन्यास हैं जो आपके पारिवारिक और सामाजिक जीवन के अकेले पन से जुड़ा हुआ हैं । तो 'अपंग' उपन्यास का बाल पात्र पुनीत अपने पिता को पिता के रुप में स्वीकार नहीं कर पाता क्योंकि उसने जन्म से उन्हें देखा ही नहीं और जब देखा भी तो उसकी माँ के साथ भयंकर रुप से लड़ते हुए । 'अंततो गत्वा' उपन्यास की नायिका आशो की यह मनोधारणा बन चुकी हैं कि उसके पिता ही उसकी माँ के हत्यारे हैं बालिका आशो माँ की मृत्यु को भुला नही पाती और मातृत्व स्नेह से वंचित एक मनोरोगी के रुप में हमारे सामने आती हैं । आज के उन्मुक्त वातावरण में बच्चे - इतने समझदार हो जाते हैं कि समय से पहले ही सब कुछ सीख जाते हैं । तो 'चक्र' उपन्यास आज स्त्री - जगत को ही नही, बल्कि समस्त समाज को चौंका देनेवाला उपन्यास हैं । उपन्यास की नायिका मधु अपने व्यक्तित्व में जीना चाहती हैं और अपनी तथा समस्त नारी जाति को अस्मिता बनाये रखने के लिए पुरुषो से टकराती हैं । तो 'सुदर्शन मजीठिया' का उपन्यास 'शकुंतला की डायरी' अभिज्ञान शाकुन्तलम् का औपन्यासिक रुप हैं । शकुंतला के माध्यम से नारी हृदय के चूक भावों को शब्दबद्ध करने का प्रयास किया हैं 'मजीठिया' जी उस प्रसिद्ध भूमि में शकुंतला के नारी हृदय ने अपनी संवेदनाओ को खोल कर रखा हैं । तो डॉ. सूर्यदीन यादव के उपन्यास 'दूसरा आँचल' समाज में जातीय, वर्गीय, एवं एकता स्थापित करने का संदेश देनेवाला सामाजिक उपन्यास हैं, जो मूलतः अहमदाबाद महानगर के प्रेसों और कारखानो में काम करनेवाले उत्तर प्रदेश के काम दारो के जीवन की बुनियादी समस्याओ पर आधारित हैं । आजीविका की तलाश में अपना घर - परिवार और प्रांत को मजबूरन छोड़ अनजाने शहरो में मजदूरी करते असंख्य श्रमिको

की यह संघर्ष गाथा हैं । विश्व बंधुत्व की भावना से ओत - प्रोत यादव जी का दूसरा उपन्यास 'माँ का आँचल' ग्राम्य परिवेश के ताने - बाने घर गाँव, खेत, खलिहान, बाग, सिवान आदि से बुना बहुरंगीय आँचलिक उपन्यास हैं जो उत्तर - प्रदेश के गोमती नदी के तट पर बसे जनपद सुलतानपुर के ग्राम्य आँचल एवं लोकजीवन का जीवंत प्रक्रिया प्रस्तुत करते हैं । तो 'ममता' उपन्यास नारी - चेतना से संबंन्धित हैं । जन्म से मृत्यु तक का फासला तय करके स्त्री जीवन को जिन परिस्थितियो से गुजरना पड़ता हैं उसका जीता - जागता चिराग 'ममता' हैं । तो 'अँधेरा जहाँ उजाला' उपन्यास उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के हरिपुर नेमापुर, डोमनपुर,तिवारीपुर, राजपुर, विनायक पुर, धर्मपुरी आदि के ग्राम्यांचल एवं लोकजीवन पर आधारित यह आँचलिक उपन्यास माटी के हर कण को उन्नति को किरण के रुप में देखता हैं । लेखक का कहना हैं कि समाज तथा राष्ट्र के अंकित तेज की जिम्मेदारी माटी के हर ढ़ेल की हैं प्रत्येक कण की हैं । उजाले की एक किरण भी अँधेरे को चिरकर नया मार्ग प्रशस्त करती हैं । अंधकार के विरुद्ध प्रकाश का आवाज उठाना यही लेखक का उद्देश्य हैं ।

तो 'चौराहे के लोग' उपन्यास में अपने लघु कलेकर मे राष्ट्रीयता को बाँधे हुए अनगिनत चेहरो के असंख्य चेहरो की पहचान करता हैं । काम की तलाश में भटकते असंख्य अनजाने चेहरो के संघर्ष की यह जीवनगाथा हैं । तो जोड़ां गंगाराम सील का 'अहित्या' उपन्यास काफी चर्चित हैं । गौतम ऋषि एवं मैगी के प्रतीक सद्गुरु हैं जो इन्द्र के दुष्कर्म पर भी उसका अहित नहीं करते । उनका शाप भी इन्द्र का भला करता हैं । सद्गुरु की उदारता का वर्णन करनेवाला यह आध्यात्मिक किस्म का उपन्यास हैं । तो दिनेश चन्द्र सिंग का 'काया और श्रम' उपन्यास एक आदर्श भारतीय नारी की संकल्पना का गौरवशाली उदाहरण प्रस्तुत करता 'काया' एक सामाजिक उपन्यास हैं । आज जब नैतिक मूल्य अपना महत्व खोते जा रहे हैं, जीवन - मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं, ऐसे समय में पश्चिमी - सभ्यता एवं संस्कृति पर भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा करता यह उपन्यास भारतीय नारी की अटलता, दृठता, आस्था, शक्ति, चारित्रगत विशेषता तथा परिश्रम एवं समय का परिचायक हैं । उनका दूसका उपन्यास 'भ्रम' भारतीय धर्म दर्शन एवं संस्कृति के प्रति गहरी आस्था जगानेवाला सामाजिक उपन्यास हैं । यूरोप में बसे भारतीय नवयुवक किस प्रकार भ्रमवश पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण कर अपना सर्वस्व नष्ट कर रहे हैं । उसका जीता - जागता दस्तावेज हैं - 'भ्रम' । युग पीढ़ी को पाश्चात्य सभ्यता की चकाचोंध और मुक्त जीवन के व्यामोह से विरल करता यह उपन्यास उन्हें जीवन सत्य से अवगत कर भ्रम भवर से निकाल सही दिशा बोध प्रदान करता हैं । तो दूसरी और श्रीमती कमलेश

सिन्हा का एक भाग उपन्यास 'विचलन' हैं । वैज्ञानिक एवं औद्योगिक प्रगति के दोर में हम पश्चिमी विश्व की अँधी नकल कर रहे हैं । और अपनी संस्कृति सभ्यता को भूले जा रहे हैं । विदेशी मूल्यों को अनुभव की कसौटी पर कसे बगैर उन्हें अपना रहे हैं और पथ भ्रष्ट होते जा रहे हैं। तो दूसरी और डॉ. गोवर्धन शर्मा का उपन्यास 'इंशवेलि' एक भिन्न प्रकार का उपन्यास हैं । संतान प्राप्ति के लिए किए जाने वाले तमाम विधानों का यहाँ उल्लेख हैं । क्यारी, बीच, अंकुर, बेलि और फूल नामक पाँच अध्यायो में विभक्त इस उपन्यास में वंश - परम्परा बनाये रखने के लिए मनुष्य द्वारा किये गये अतिपुरातन से अत्याधुनिक प्रयत्नो का लेखा - जोखा हैं । तो उपन्यासकार केशुभाई देसाई ने 'दीमक' नामक अपनें उपन्यास में गुजरात में १९६९ के सांप्रदायिक दंगों को कथानक को मूल आधार बनाकर एक और जहाँ सांप्रदायिक्ता के विष - बीज बोने वाले व्यक्ति या व्यक्ति समुदाय के मनोविकारो का बड़ी सूक्ष्मता एवं कलात्मकता से चित्रण किया हैं वही इस और भी अँगुली उठायी हैं कि पीडितो के दु:ख - दर्द के शमन का दायित्य जिन्हे बड़े विश्वास के साथ सौंपा जाता हैं उनमें भी यह जहर बुरी तरह फेल जाता हैं और अपने दायित्य के प्रति वे भी बहुत लापरवाह और हृदयहीन हो जाते हैं । तो डॉ. घनश्याम अग्रवाल का उपन्यास 'सागर और सीपी' उपरोक्त गाँवो, कस्बो की आँचलिकता परिवेश से एक दम भिन्न आज के युग की एक विशिष्ट समस्या व्यक्ति स्वातंत्रय की कथा को लेकर आता हैं । उसमें जो प्रेमकथा कही गई हैं । वह अनेक नए, अछूते और सूक्ष्म स्तरो को उद्घाटित करती हैं समूचे उपन्यास में अनुराग की मनोदशा विविध संदर्भो से निरुपित हुई हैं । यह कहानी एक और दो मानव संबंधो से लेकर पारिवारिक संबंधो को उद्घाटित करती हैं । तो दूसरी तरफ भी संकेत करती हैं तो डॉ. कमलेश सिंह के अप्रकाशित उपन्यास 'अन्त:राग' में महिलाओं के लिए मानवाधिकारो के स्वीकृत मापदण्ड़ो का आधार लेते हुए नायिका अपने अधिकारों के प्रति सचेत होती हैं । युगानुरुप वह जीवन के अनेक उतार - चढ़ाव पार करती हुई, नायक को भी सत्ता को पार करती हुई अंतिम - पड़ाव पर आते - आते स्वयं स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी को विकास यात्रा में उक्त कहानी आन्दोलनो का योगदान अवश्य हैं । ये विभिन्न कहानी आन्दोलन स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी को विकास मात्रा के परिचायक है। इस कहानी के विकास को देखते हुए स्पष्ट रुप से कहा जा सकता हैं कि हिन्दी कहानी साहित्य को इन कहानीकारों ने विश्व कहानी साहित्य की कोटि में सुशोभित करने का प्रयास निरंतर किया । विराट होने लगती हैं । इस उपन्यास की कथावस्तु में अनेक स्थापनाएँ एवं चुनौतियाँ प्रस्तुत की गई हैं । जिनका उद्देश्य महिलाओ में मानवाधिकार की चेतना जागृत करता हैं ।

गुजरात के ही उपन्यास लेखकों में भावनगर के डॉ. सुदर्शन सिंह मजीठिया प्रतिष्ठित उपन्यासकार हैं । इनके पाँच उपन्यास 'जसकोट का चिगकार,', 'लोहे की लाशें', 'उखड़ी हुई आँधी', 'शकुंतला की डायरी', तोपों के साचे में' चर्चित उपन्यास हैं । वे मुख्य रुप से व्यंग्यकार हैं अतः उपन्यासो में भी उनकी शैली कही - कही व्यंग्य प्रदान रही हैं। अहमदाबाद के ही डॉ. शैलेष पंड़ित के दो उपन्यास 'देश जिंदाबाद' तथा 'बंधुविरादर' क्षेत्रीय स्तर के उपर उठकर भारत के बड़े फलक पर पाठको का ध्यान आकर्षित कर सकी हैं । तो राजपीपला के अशोक शाह के उपन्यास 'प्रेम कभी मरता नहीं' दो अगस्त से एक अगस्त तक' 'घर परायो का', 'सागर को खरीद लो' तथा 'सूरज की किरण' आदि उपन्यास भी अपने समय के चर्चित उपन्यास हैं जिनका कथ्य देश प्रेम तथा समाजिकता हैं । बल्लभ विद्यानगर के आचार्य बदरी प्रसाद साकरिया का 'अनोखी आन' बड़ोदा के डॉ. विष्णु विराट के उपन्यास टूटती लकीरे बंद कमरे की धूप, तथा शेखर जैन का मृत्युंजयी केक्ली राय आदि चर्चित हैं ।

गुजरात के हिन्दी उपन्यास साहित्य को समृद्ध बनाने में कई उपन्यासकारों का योगदान रहा हैं । जैसे इन्दिरा दीवान, सुधा श्रीवास्तव, प्रणव भारती, सुदर्शन मजीठिया, सूर्यदीन यादव, दिनेश चन्द्र सिंहा, शैलेष पंड़ित इत्यादि डॉ. सूर्यदीन यादव गुजरात के हिन्दी साहित्य की आँचलिक कथा धारा के एक हस्ताक्षर हैं । 'दूसरा आँचल' समाज में जातीय, वर्गीय एवं धार्मिक एकता स्थापित करने का संदेश देनेवाला एक सामाजिक उपन्यास हैं । जब हम स्वदेश को छोड़कर परदेश में रहने जाते हैं । तब दो संस्कृतियाँ, दो भाषाएँ दो दिशाएँ एक - दूसरी जमीन, दूसरे गाँव और शहर अपने लगते हैं । हम जाति - पाँति के भेदभाव से ऊपर उठ जाते हैं । लेखक को लगता हैं कि काश उसी एकता के दर्शन पूरे विश्व में होते तो विश्व का आँचल एक लगता । फिर दो माँ नहीं होती । गाँव शहर नहीं होता। सारी जमीन सारा आँचल एक लगता तो वही पर 'माँ का आँचल' उपन्यास ग्राम्य परिवेश के ताने - बाने, घर - गाँव, खेत - खलिहान, बाग, सिवान आदि से बन गया यह बहुरंगीय' आँचलिक उपन्यास उत्तर - प्रदेश के गोमती नदी के तट पर बसे जनपद सुल्तानपुर के ग्राम आँचल एवं लोक जीवन का जीवंत चित्रण हैं । जहां दिन, सप्ताह, नक्षत्र, पक्ष, महीने और साल, उत्सव - पर्व ऋतुएँ बल्कि समग्र परिवेश मानव - जीवन धार बनकर आते हैं । यह एक अछूते आँचलिक परिवेश पर लिखा गया आँचलिक उपन्यास हैं ।

"स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में गुजरात के कहानीकारो की नजर अंदाज नहीं किया जा सकता हैं । प्रादेशिकता का रंग आँचलिक भाषा का सहज प्रयोग, प्रतिक, सूक्ष्म मनोविश्लेषण के द्वारा कहानियाँ बोलती सी प्रतीत होती हैं ।"[३९]

इस समय गुजरात के आत्म - परक (संस्मरण) साहित्य में श्रीमती विज्ञानवाला जौहरी की 'सपनों के आरपार' (आत्मकथात्मक विवरण) १९९९ में प्रकाशित हुई । डॉ. रमाकांत शर्मा की पुस्तक 'कुछ अपनी बातें' सन् २००० में प्रकाशित हुई । डॉ. सूर्यदीन यादव की पुस्तक 'प्रारम्भिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व' सन् २००० में प्रकाशित हुई । भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज' की 'अतीत की झलकियाँ' २००१ में प्रकाशित हुई ।

डॉ. सूर्यदीन यादव की पुस्तक 'प्रारम्भिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व' में लेखक ने अपने प्रारम्भिक उद्‌बोधन में स्वयं कहा हैं कि "इस रचना को नैबंधिक रचनात्मक स्वरुप देने का प्रयास किया हैं । कहीं वे संस्मरण भी लग सकते हैं ।" इस पुस्तक में विविध विषय और जो उनके प्रेरक व्यक्तित्व रहे हैं उनके बारे में संस्मरण लिखे हैं।

श्रीमती निकुंज की कहानियाँ ग्रामीण और शहरी परिवेश के अतिरिक्त दाम्पत्य जीवन की दिन - प्रतिदिन की घटनाओं का लेखा - जोखा भी प्रस्तुत करता हैं । एक महिला कथाकार होने के नाते इनकी कहानियों में व्यक्तिगत संवेदनाओं भावनाओं ने कुछ अधिक ही स्थान पाया हैं । श्रीमती निकुंज की कविताएँ भी प्रकाशित हुई हैं । कहीं - कहीं लेखिका का कवि हृदय भी कहानियों में सिर्फ हावी ही नहीं होता, बल्कि छायावाद युग के कल्पनालोक की याद दिलाता हैं । कहानियों में बार - बार कविताओं की पंक्तियाँ या अन्य लेखको की पंक्तियों कहानी शिल्प की दृष्टि से अवरोध ही पैदा करती हैं । डॉ. रोहितश्याम चतुर्वेदी का कहानी संग्रह 'पारदर्शी चेहरे' १४ कहानियों का ऐसा संग्रह है, जिसमें जीवन के अनेक रंगो से भरी श्रेष्ठ कहानियाँ विद्यमान हैं । कथाकार की भाषा और वैचारिक प्रबुद्धता कहानियों को संवेदनशील बना देती हैं । सामाजिक पाखंड़, भ्रष्टाचार, तथा कथित समाज का प्रतिनिधितत्व करनेवाले नेताओं की मानसिकता कहानियों में स्पष्ट रुप से व्यंग्यात्मक ढ़ंग से रेखांकित होती हैं । इस संग्रह की 'शवयात्रा', 'कर्फ्यू', 'पीपड़ का पेड़', 'छुअन', 'बंदमुठ्ठियाँ' और 'मंगलसूत्र' कहानियाँ विभिन्न वर्गो का प्रतिनिधित्व करती हैं । डॉ. चतुर्वेदी की कहानियाँ उपदेश नहीं देती हैं, वे जीवन के अभिशप्त सत्य और यथार्थ को उजागर करती हैं । 'पारदर्शी चेहरे' के पात्र मजदूर वर्ग से लेकर संभ्रांत वर्ग के हैं । कथाकार का लेखकीय सामर्थ्य और विशाल मानसिक फलक दोनों ही झलकते हैं। गुजरात की समकालीन कहानियों की शृखला में यह कहानी - संग्रह वास्तव में संग्रहणीय हैं।

इसी क्रम में श्री गोपाल शर्मा का कहानी संग्रह 'शब्दों का सौदागर' डॉ. सुदर्शन मजीठिया का 'महाप्राण', डॉ. सूर्यदीन यादव का 'वह रात' श्री जयंत रेलवाणी का 'आक्रोश'

श्री रमेश देवमाणि का 'फरमाइश' भी उल्लेखनीय हैं । लघुकथाएँ और काल - साहित्य का सृजन भी हुआ हैं, परन्तु विस्तार की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए उनका उल्लेख नहीं किया जा रहा हैं ।

निष्कर्ष के रुप में कहा जा सकता हैं कि कहानी विद्या के क्षेत्र में गुजरात अन्य प्रान्तों की तुलना में पीछे नहीं हैं, अपेक्षा की जाती हैं कि गुजरात के कहानीकार निकट भविष्य में अपनी कृतियों के माध्यम से सिर्फ अपना ही नहीं गुजरात का नाम भी रोशन करेगें ।

गुजरात के कहानीकारों में सूर्यदीन यादव का महत्त्व बताते हुए ईश्वर सिंह चौहान लिखते हैं । कि "गुजरात की भूमिका में समकालीन साहित्य को याद किया जाय तो अपनी सक्रिय सर्जनात्मकता के कारण डॉ. सूर्यदीन यादव का नाम सहज ही होंठो पर आ जाता हैं । अपनी निरन्तर सर्जनात्मकता एवम् साहित्यिक भावात्मकता के कारण गुजरात के हिन्दी साहित्य की चर्चा सूर्यदीन यादव के बिना अपूर्ण होगी ।"[४०]

संदर्भ सूचि

नं.	कृति	पृष्ठ
१.	साहित्यिक निबंध - सम्पादक डॉ. शांतिस्वरुप गुप्त	३२२
२.	साहित्यिक निबंध - सम्पादक डॉ. शांतिस्वरुप गुप्त	३२०
३.	साहित्यिक निबंध - सम्पादक डॉ. शांतिस्वरुप गुप्त	३२१
४.	काव्य के रुप - सम्पादक डॉ. गुलाबराय	०५७
५.	साहित्यिक निबंध - सम्पादक डॉ. शांतिस्वरुप	३२१
६.	हिन्दी कहानी का विकास - डॉ. देवेश ठाकुर	०४४
७.	कहानी - पथ भूमिका - सम्पादक महेन्द्र प्रताप	०२७
८.	कहानी - पथ भूमिका - सम्पादक महेन्द्र प्रताप	०२८
९.	हिन्दी साहित्य - युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिवकुमार शर्मा	५९७-९८
१०.	हिन्दी कहानी उद्भव और विकास - डॉ. सुरेन्द्र सिंह	४७९-८०
११.	हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा - डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ	०३७
१२.	हिन्दी कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन - डॉ. महेशचंद्र दिरासर	०६२
१३.	हिन्दी कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन - डॉ. महेशचंद्र दिरासर	०६४
१४.	नई कहानी की भूमिका - कमलेश्वर	००१
१५.	कहानी - नई कहानी - नामवर सिंह	०५९
१६.	हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा - सूर्यकान्त दीक्षित	१९०
१७.	कहानी के नये सीमान्त - रत्नलाल शर्मा	०१९
१८.	हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा - डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ	०४८
१९.	हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा - डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ	०५०
२०.	हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा - सूर्यकान्त दीक्षित	२०४

२१. हिन्दी कहानी के आंदोलन, उपलब्धियाँ और सीमाएँ – डॉ. रजनीश कुमार ०४५

२२. हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा – डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ ०५६

२३. हिन्दी कहानी के आन्दोलन, उप और सीमाएँ – डॉ. रजनीशकुमार ०५७

२४. हिन्दी कहानी के आन्दोलन, उप और सीमाएँ – डॉ. रजनीशकुमार ०५४

२५. हिन्दी कहानी के आन्दोलन, उप और सीमाएँ – डॉ. रजनीशकुमार ०६०

२६. साठोत्तरी हिन्दी कहानी – के. एन. मालती ०४८

२७. हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा – डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ ०६१

२८. हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा – डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ ०९५

२९. हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा – डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ ०७३

३०. हिन्दी कहानी के आन्दोलन, उप और सीमाएँ – डॉ. रजनीशकुमार ०८३

३१. सक्रिय कहानी की भूमिका – राकेश वत्स ०१७

३२. सक्रिय कहानी की भूमिका – राकेश वत्स ०१७

३३. हिन्दी कहानी का विकास – डॉ. देवेश १९५

३४. आधुनिक हिन्दी साहित्य और अनुसंधान – डॉ. राजूरसर डॉ. राजकमल बोल १००

३५. आधुनिक हिन्दी साहित्य और अनुसंधान – डॉ. राजूरसर डॉ. राजकमल बोल १०१

३६. आँचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव श्रीमती कांति अय्यर ०६९

३७. कथाकार सूर्यदीन यादव डॉ. मायाप्रकाश पान्ड़े ०१७

३८. आँचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव श्रीमती कांति अय्यर १०७

३९. गुजरात का समकालीन साहित्य डॉ० रामकुमार गुप्ता ३२८

४०. साहित्य – परिवार पत्रिका अंक – २ सं. डॉ. सूर्यदीन यादव ०६१

• • •